



सिल्लिए फ़ैज़ाने अ-श-रए मुबशरह के दसवें सहाबी

Hazrate Sayyiduna Abu Ubaida Bin Jarraah (Hindi)

رضي الله عنه

हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जर्हाह



- | | |
|---|----|
| ● किरदार के गाज़ी | 1 |
| ● मरातिबे आशिक़ाने मुस्तफ़ा ब ज़बाने मुस्तफ़ा | 15 |
| ● ओहदा लिये जाने पर हम्दे इलाही | 34 |
| ● नसीहत आमोज़ वसिख्यत | 49 |
| ● इश्क़े रसूल का अ-मली मुज़ा-हरा | 11 |
| ● घर का कुल सामान सिर्फ़ तीन चीज़ें | 22 |
| ● ख़ल्वत में फ़िक़रे मदीना | 44 |



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज: शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ
दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ
पढ़ लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है:

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा: ऐ अल्लाह! عَزَّوَجَلَّ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और
हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले।

(المُستطرف ج ١ ص ٤٠، دارالفكر بيروت)

नोट: अब्बल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे गुमे मदीना
व बकी अ
व मरिफ़रत



13 शब्बालुल मुकर्रम 1428 हि.

हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन ज़राह रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह रिसाला (हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन ज़राह रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ)
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में
मुक्तब किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल
ख़त् में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ
करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को
(ब ज़रीअए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता: मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail: translationmaktabhind@dawateislami.net

- नाम किताब : हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه
 पेशकश : शो'बए फ़ैज़ाने सहाबा व अहले बैत
 (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)
 सिने त्बाअत : रबीउल अव्वल 1437 सि.हि.
 नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अहमदआबाद

मक-त-बतुल मदीना की शारवें

- मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफिस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
 देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
 नागपुर : मुहम्मद अली सराय रोड (C/O) जामिअतुल मदीना, कमाल शाह बाबा दरगाह के पास, मोमिनपुरा, नागपुर फ़ोन : 09373110621
 अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के करीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, : 0145- 2629385
 हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्स, A.J. मुढोल रोड, ब्रीज के पास, हुब्ली - 580024. फ़ोन : 08363244860
 हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040 24572786

म-दनी इल्लिजा : किसी और को यह किताब छापने की इजाज़त नहीं है ।

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَتَابَعْتُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

رضی اللہ تعالیٰ عنہ
हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने रहमत निशान है : क़ियामत के रोज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अर्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अर्श के साए में होंगे : (1) वोह शख्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे (2) मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला ।”¹

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

किरदार के ग़ाज़ी

मुसलमानों ने मुसल्लसल कई रोज़ से रूमी क़ल्ए का मुहा-सरा किया हुवा था और एक मर्तबा रूमी क़ल्ए से बाहर आ कर मुसलमानों से झड़प भी कर चुके थे लेकिन मुंह की खा कर वापस क़ल्ए में महसूर हो गए । जब सुल्ह के इलावा कोई सूरत बाकी न रही तो उन्हों

11..... البدور السّافرة فی امور الاخرة للسبوطی، الحدیث: 362، ص 131

ने लश्करे इस्लाम के सिपह सालार की जानिब पैग़ाम भेजा कि हम आप से सुल्ह करने के लिये अपना क़ासिद भेजना चाहते हैं। अगर आप ने हमारी येह अर्ज़ क़बूल कर ली तो हम इसे अपने और आप के हक़ में बेहतर समझेंगे और अगर आप ने इन्कार कर दिया तो यकीनन इस में सरासर नुक़सान ही होगा। मुसल्मानों के सिपह सालार ने उन की पेशकश को क़बूल कर लिया और इर्शाद फ़रमाया : “ठीक है तुम अपने क़ासिद को भेज दो।” रूमियों ने मुसल्मानों के सिपह सालार को मु-तअस्सिर करने के लिये निहायत ही कीमती लिबास में मल्बूस एक दराज़ क़ामत शख़्स को सफ़ीर बना कर भेजा। चूँकि रूमी सफ़ीर ने मुसल्मानों के सिपह सालार को पहले नहीं देखा था इस लिये वोह मुसल्मानों के लश्कर के क़रीब पहुंच कर यूं मुख़ातिब हुवा : “ऐ गुरौहे अरब ! तुम्हारा सिपह सालार कहां है ?” मुसल्मान सिपाहियों ने एक तरफ़ इशारा कर के बताया कि वोह वहां होंगे। जब सफ़ीर ने उस जगह पहुंच कर देखा तो उस की आंखें फटी की फटी रह गईं, क्यूं कि मुसल्मानों के सिपह सालार के बारे में शायद उस ने अपने ज़ेहन में येह ख़ाका बनाया था कि उस का बहुत बड़ा दरबार होगा जिस में वोह अज़ीमुश्शान तख़्त पर कीमती लिबास पहने बिराजमान होगा, बीसियों ख़ादिमीन उस के सामने सर झुकाए बा अदब उस के हुक्म की ता'मील के लिये हर वक़्त तय्यार खड़े होंगे, उस के आस पास पहरेदारों की एक फ़ौज होगी और उस तक पहुंचने के लिये शायद मुझे कई एक मराहिल तै करना होंगे। लेकिन क्या देखता है कि एक कमज़ोर जिस्म और लम्बे क़द वाले बा रो'ब शख़्स ज़मीन पर बैठे

हैं और अपने हाथ से तीरों को उलट पलट कर जंगी हथियारों का मुआ-यना कर रहे हैं। रूमी सफ़ीर ने उस शख्स की तरफ़ देखते हुए बड़ी हैरानी से पूछा : “क्या आप ही मुसलमानों के सिपह सालार हैं ?” उन्होंने ने जवाब दिया : “जी हां।” सफ़ीर ने कहा : “आप के ज़मीन पर तशरीफ़ फ़रमा होने की क्या वजह है ? अगर तक्ये से टेक लगा कर या क़ालीन पर तशरीफ़ फ़रमा होते तो भी **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के नज़्दीक मुअज़्ज़ज ही रहते, आप ने खुद को इन ने'मतों से क्यूं महरूम रखा हुवा है ?” इस पर मुसलमानों के सिपह सालार ने फ़रमाया : “जब **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हक़ बयान करने से हया नहीं फ़रमाता तो मैं आप से क्यूं शरमाऊं ? बात दर अस्ल येह है कि मेरी ज़रूरत का सामान ज़ियादा से ज़ियादा तलवार, घोड़ा और दीगर चन्द हथियार हैं, अलबत्ता ! अगर इन के इलावा मुझे किसी और चीज़ की ज़रूरत महसूस हो तो मैं अपने इस्लामी भाई मुआज़ से कर्ज़ ले लेता हूं, अगर मुआज़ को कोई हाजत होती है तो वोह मुझ से कर्ज़ ले कर अपनी ज़रूरत पूरी कर लेते हैं (यूं हमारा दिल उन आसाइशों की जानिब माइल ही नहीं होता जिन का तज़िकरा तुम कर रहे हो) बिलफ़र्ज़ ! अगर मुझे क़ालीन मुयस्सर हो भी जाए तो मैं उस पर कैसे बैठ सकता हूं जब कि मेरे दीगर भाई तो ज़मीन पर बैठते हैं (और मुझे इस तरह का कोई इम्तियाज़ गवारा नहीं क्यूं कि) हम **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के बन्दे हैं, ज़मीन पर चलते हैं, इसी पर बैठ जाते हैं, इसी पर बैठ कर खा पी लेते हैं, इसी पर सो जाते हैं, इन बातों के सबब **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में हमारा सवाब बढ़ने के साथ साथ मज़ीद द-रजात भी बुलन्द हो जाते हैं।”

हम खाक हैं और खाक ही मावा है हमारा

खाकी तो वोह आदम जदे आ 'ला है हमारा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क्या आप जानते हैं कि येह सिपह सालार कौन थे ? जो फ़क़त गुफ़्तार के गाज़ी नहीं बल्कि किरदार के गाज़ी थे, जिन्हों ने अपनी शख़्सियत से ऐसे शख़्स को मु-तअस्सिर कर दिया जो इन्हें मु-तअस्सिर करने आया था । येह सिपह सालार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार صلى الله تعالى عليه وآله وسلم के नामवर सहाबी और मुसल्मानों के अज़ीम जर्नेल हज़रते सय्यिदुना अमिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله تعالى عنه थे जो हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه के नाम से मशहूर हैं ।

नाम व नसब

आप رضي الله تعالى عنه का मुकम्मल नाम अमिर बिन अब्दुल्लाह बिन जराह बिन हिलाल बिन वुहैब बिन जब्बह बिन हारिस बिन फ़िहर बिन मालिक बिन नज़्र बिन किनानह क़-रशी फ़िहरी है । सिल्सिलए नसब सातवीं पुशत में फ़िहर पर रसूलुल्लाह صلى الله تعالى عليه وآله وسلم के नसब से जा मिलता है । आप رضي الله تعالى عنه की कुन्यत अबू उबैदा है और वालिद का नाम अगर्चे अब्दुल्लाह है मगर दादा जराह की निस्बत से मशहूर हैं ।

आप رضي الله تعالى عنه की वालिदए माजिदा हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे अबी उबैदा उमैमा बिनते ग़नम رضي الله تعالى عنها भी इस्लाम ले आई

थीं, जिन का पूरा नाम उमैमा बिनते ग़नम बिन जाबिर बिन अब्दुल उज़्ज़ा बिन अमिर बिन उमैरा बिन वदीआ बिन हारिस बिन फ़िहर है, मां कि जानिब से आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का सिल्लिसलए नसब नवीं पुश्त में फ़िहर पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नसब से जा मिलता है।¹

हुल्यए मुबा-रका

हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जर्हाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ दराज क़द, दुब्ले पतले और इन्तिहाई नूरानी चेहरे वाले थे, सर के बालों और दाढ़ी मुबा-रका में मेहंदी लगाया करते थे।

आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की शख़ि़सय्यत हर ए'तिबार से मु-तअस्सिर कुन थी। निहायत ही ज़हीन, बेहद मुन्कसिरुल मिज़ाज, मिलन-सार और आबिदो ज़ाहिद होने में अपनी मिसाल आप थे। आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का शुमार जंगी उमूर के माहिरीन में होता है, आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की तदाबीर मैदाने जंग का नक्शा बदल दिया करती थीं। आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ही की क़ियादत में मुसलमानों ने उस वक़्त की सब से बड़ी ताक़त रूम से टक्कर ली और काम्याबी हासिल की।²

क़बूले इस्लाम

हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जर्हाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का

1..... الاصابة في تمييز الصحابة، الرقم 18 221 عاصر بن عبد الله، ج 3، ص 45

تهذيب الاسماء، الجزء الثاني، النوع الثاني الكنى، حرف العين، ج 2، ص 52

2..... الاصابة في تمييز الصحابة، الرقم 18 221 عاصر بن عبد الله، ج 3، ص 46

الرياض النضرة، ج 2، ص 35

शुमार उन सहाबए किराम عليهم الرضوان में होता है जिन्होंने ने इब्तिदाअन इस्लाम कबूल फ़रमाया, जिस वक़्त आप رضي الله تعالى عنه मुसलमान हुए उस वक़्त आप رضي الله تعالى عنه के साथ हज़रते सय्यिदुना उस्मान बिन मज़ज़न رضي الله تعالى عنه भी थे। आप رضي الله تعالى عنه भी उन सहाबए किराम عليهم الرضوان में हैं जिन्होंने ने अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رضي الله تعالى عنه के हाथ पर इस्लाम कबूल फ़रमाया।¹

अज़्वाज व औलाद

हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه की एक जौजा थीं जिन से दो ही बेटे यज़ीद और उमैर पैदा हुए। जौजा का नाम हिन्द बिनते जाबिर बिन वहब बिन ज़बाब बिन हजीर था।²

जुल हिज्रतैन

मक्कए मुकर्रमा में जब मुसलमानों पर हद से ज़ियादा जुल्मो सितम ढाए गए तो मुसलमानों ने मक्का से हिजरत की, कुल तीन हिजरतें हैं : दो मक्का से हबशा की तरफ़ और एक मक्का से मदीने की तरफ़। हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه वोह खुश नसीब सहाबी हैं जिन्हें दो हिजरतों की सआदत हासिल हुई, मक्का से हबशा की तरफ़ दूसरी हिजरत में शरीक हुए और फिर मदीने की तरफ़ हिजरत की सआदत हासिल की।³

1.....الرياض النضرة، ج ٢، ص ٣٢٦

2.....الرياض النضرة، ج ٢، ص ٣٥٩

3.....اسد الغابة، عاصرین عبد الله بن جراح، ج ٣، ص ١٢٥

तमाम गज़वात में शिर्कत

आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ वोह खुश नसीब सहाबी हैं जिन्हें गज़्वाए बद्र में शिर्कत के साथ साथ सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मड़्य्यत में तमाम गज़वात में शिर्कत की सआदत हासिल हुई ।¹

रिज़ाए इलाही का मुज़्दा

आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ को बैअते रिज़्वान में शिर्कत की सआदत भी हासिल है ।² और बेशक बैअते रिज़्वान में शरीक होने वाले तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को रिज़ाए इलाही का मुज़्दा सुनाया गया है । चुनान्चे इशादि बारी तआला है :

لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ
إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ
فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ
السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ
فَتْحًا قَرِيبًا ۝ (١٨) (٢٦، الفتح: ١٨)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह राजी हुवा ईमान वालों से जब वोह उस पेड़ के नीचे तुम्हारी बैअत करते थे तो अल्लाह ने जाना जो उन के दिलों में है तो उन पर इत्मीनान उतारा और उन्हें जल्द आने वाली फ़तह का इन्आम दिया ।

सदरुल अफ़ज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुराद आबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي इस आयत के तहत

1.....الاصابة، الرقم ١٨ ٢٢١٨ عاصر بن عبد الله، ج ٣، ص ٢٤٥

2.....الرياض النضرة، ج ٢، ص ٣٥٠

“ख़ज़ाइनुल इरफ़ान” में फ़रमाते हैं : हुदैबिया में चूंकि उन बैअत करने वालों को रिज़ाए इलाही की बिशारत दी गई इस लिये इस बैअत को बैअते रिज़्वान कहते हैं ।”

अमीनुल उम्मत

हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه वोह खुश नसीब सहाबी हैं जिन्हें बारगाहे रिसालत से “अमीनुल उम्मत” का लक़ब अता हुवा । चुनान्वे,

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : “हर उम्मत में एक अमीन होता है और इस उम्मत के अमीन अबू उबैदा बिन जराह हैं ।”¹

अमीन शख़्स का मुता-लबा

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رضي الله تعالى عنه से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि अहले नजरान बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : “या रसूलल्लाह صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ! हमारे पास एक ऐसा आदमी भेज दीजिये जो अमीन (अमानत दार) हो ।” इर्शाद फ़रमाया : “मैं तुम्हारे पास एक ऐसा अमीन भेजूंगा जो वैसा ही अमीन है जैसा उसे होना चाहिये ।” तो लोगों ने देखा कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه को भेजा ।²

1..... صحيح البخارى، كتاب فضائل اصحاب النبى، الحديث: ٣٤٣٢، ج ٢، ص ٥٢٥

2..... صحيح البخارى، كتاب فضائل اصحاب النبى، الحديث: ٣٤٣٥، ج ٢، ص ٥٢٦

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान
 इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : मतलब यह है
 कि निहायत ही आ'ला दरजे का अमीन है जैसे कहा जाता है कि ज़ैद
 जैसा आलिम होने का हक़ है वैसा आलिम है। सारे सहाबा अमानत
 वाले हैं मगर हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन ज़र्राह رضی اللہ تعالیٰ عنہ
 अब्वल नम्बर अमानत दार ।¹

महबूबे हबीबे ख़ुदा

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ से
 रिवायत है, फ़रमाते हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन हज़रते
 सय्यि-दतुना अइशा सिद्दीका رضی اللہ تعالیٰ عنہا से पूछा : “सरकार
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नज़्दीक़ सब से ज़ियादा महबूब कौन था ?”
 इर्शाद फ़रमाया : “अबू बक्र, फिर उ़मर और इस के बा'द अबू उ़बैदा
 बिन ज़र्राह رضی اللہ تعالیٰ عنہم ।” मैं ने पूछा : “फिर कौन ?” तो आप
رضی اللہ تعالیٰ عنہا ने कोई जवाब न दिया और ख़ामोश ही रहीं ।²

आप की ज़ात में कोई कलाम नहीं

हज़रते सय्यिदुना मुबारक बिन फ़ज़ाला رضی اللہ تعالیٰ عنہ हज़रते हसन
 से रिवायत करते हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे
 रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “अबू उ़बैदा बिन
 ज़र्राह ऐसे शख़्म हैं जिन के अख़्लाक़ के बारे में कोई कलाम नहीं ।”³

[1]..... मिरआतुल मनाज़ीह, जि. 8, स. 447

[2]..... سنن ابن ماجه، فضائل اصحاب رسول الله، فضل عمر، الحديث: 102، ج 1، ص 45

[3]..... المستدرک، کتاب معرفة الصحابة، باب الصوم جنب الخ، الحديث: 5206، ج 2، ص 299

रोशन और प्यारा चेहरा

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ تعالیٰ عنہما फ़रमाते हैं कि कुरैश के तीन शख़्सों का चेहरा सब से ज़ियादा रोशन और प्यारा है, उन के अख़लाक़ भी सब से अच्छे हैं और शर्मो हया में भी सब से बढ़ कर हैं। (वोह ऐसे हैं कि) अगर तुम से बात करें तो झूट न बोलें और तुम उन से बात करो तो न झुटलाएं। और वोह अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उस्मान बिन अफ़फ़ान और हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन ज़र्राह अज्मेिन عنہم हैं।¹

इश्क़े रसूल का अ-मली मुज़ा-हरा

ग़ज़्वए उहुद में जब नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर ग़ज़्वए उहुद में जब नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के रुख़सारे मुबारक “ख़ौद” की कड़ियां पैवस्त होने से ज़ख़मी हुए तो हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन ज़र्राह رضی اللہ تعالیٰ عنہ येह देख कर तड़प उठे और इश्क़े रसूल का अ-मली मुज़ा-हरा करते हुए सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास पहुंच कर फ़ौरन ही उन कड़ियों को अपने दांतों से निकालने लगे, पहली कड़ी निकली तो साथ ही आप का सामने का एक दांत टूट गया और दूसरी कड़ी निकली तो दूसरा दांत भी टूट गया।²

काफ़िर बाप का सर क़लम कर दिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुरआने पाक पारह 26

1.....المعجم الكبير، الحديث: ١٢، ج ١، ص ٥٦

2.....المستدرک، کتاب معرفة الصحابة، الحديث: ٥٢٠٨، ج ٢، ص ٣٠٠

सू-रतुल फ़तह आयत नम्बर 29 में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ
مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ
رُحَمَاءَ بَيْنَهُمْ

(ب २१, الفتح: २९)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : मुहम्मद
अल्लाह के रसूल हैं और इन के साथ
वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस
में नर्म दिल ।

नीज़ फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : “तुम में से उस वक़्त तक कोई कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उस के नज़दीक उस के वालिदैन, औलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा महबूब न हो जाऊं।”¹ तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इन दोनों नुसूस की मुंह बोलती तस्वीर थे और बा'ज़ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने तो इस का ऐसा अ-मली मुज़ा-हरा फ़रमाया कि रहती दुन्या तक उसे याद रखा जाएगा, हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जर्आह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ भी वोह सहाबी हैं जिन्हों ने इस्लाम और मुबल्लिगे इस्लाम की महबबत में क़तअन किसी की परवाह न की क्यूं कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ فِي اللَّهِ وَالْبَعْضُ فِي اللَّهِ (या'नी महबबत और दुश्मनी सिर्फ़ अल्लाह के लिये हो) की मुंह बोलती तस्वीर थे । चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जर्आह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का काफ़िर बाप जंगे बद्र या उहुद के दौरान आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के सामने आता मगर हट जाता । कई बार ऐसा ही हुवा और जब वोह आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के आड़े आया तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उस का सर कलम कर दिया ।²

1.....صحيح البخارى، كتاب الايمان، الحديث: ١٥٠٥، ج ١، ص ١٤

2.....تهذيب التهذيب، حرف العين، ج ٢، ص ١٦٣

آپ کے ہک میں ناज़یل होने वाली आयत

ہجرتے سخییڈونا ابوبکر بنی زبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے جب اپنے والید کا سر کلام کیا تو اللہ عزوجل نے یہ آیتے کریما ناज़یل فرمائی :

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَ
الْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ
حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا
آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ
إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ
أُولَئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ
الْإِيمَانَ (المجادلة: ۲۲)

تر-ج-مए कन्ज़ुल ईमान : तुम न पाओगे उन लोगों को जो यकीन रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल से मुखा-लफ़त की अगर्चे वोह इन के बाप या बेटे या भाई या कुम्बे वाले हों येह हैं जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़श फ़रमा दिया ।¹

सिद्दीके अक्बर के नज़दीक आप का मक़ाम

सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की वफ़ते ज़ाहिरी के बा'द ख़िलाफ़त के मुआ-मले में अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सخییڈونا अबू बक्र सिद्दीक رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने लोगों से इशाद फ़रमाया : "येह दो मेरे पसन्दीदा अफ़राद हैं या'नी हज़रते सخییڈونا उमर फ़ारूक़ और हज़रते सخییڈونا अबू उबैदा बिन ज़र्राह رضی اللہ تعالیٰ عنہ इन दोनों में से जिस की चाहे बैअत कर लो ।"²

[1].....المعجم الكبير، الحديث: ۳۶۰، ج ۱، ص ۱۵۵

[2].....الاستيعاب في معرفة الاصحاب، الرقم ۱۳۳۰، عامر بن عبد الله، ج ۲، ص ۳۲۲

आप के नज़दीक सिद्दीक़े अक्बर का मक़ाम

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضی اللہ تعالیٰ عنہ से इर्शाद फ़रमाया : “ऐ अबू उबैदा ! क्या मैं आप (के हाथ पर आप) की बैअत न कर लूं ? क्यूं कि मैं ने हुजूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صلى الله تعالى عليه وآله وسلم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है : आप इस उम्मत के अमीन हैं । आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने इर्शाद फ़रमाया : “मैं ऐसे शख़्स (या'नी हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ) के आगे कैसे नमाज़ पढ़ सकता हूं जिन्हें प्यारे आक़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने हमारा इमाम बनाया और आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم के दुन्या से पर्दा फ़रमाने तक वोह हमारे इमाम ही रहे ।”¹

मरातिबे आशिक़ाने मुस्तफ़ा ब ज़बाने मुस्तफ़ा

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : “मेरी उम्मत में सब से ज़ियादा शफ़ीक़ और मेहरबान अबू बक्र, दीनी मुआ-मलात में सब से ज़ियादा सख़्त उमर, हया के मुआ-मले में सब से ज़ियादा सच्चे उस्मान, किताबुल्लाह के सब से बड़े क़ारी उबय बिन का'ब, इल्मुल फ़राइज़ को सब से ज़ियादा जानने वाले ज़ैद बिन साबित और हलाल व ह़राम के सब से बड़े आलिम मुआज़ बिन जबल हैं और सुन लो ! हर उम्मत

1.....المستدرک، ذکر مناقب ابی عبیدة، الحدیث: ۶۴، ۵۱، ج ۳، ص ۳۰۰

में एक अमीन होता है इस उम्मत के अमीन अबू उबैदा बिन जराह हैं।”¹

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं “ख़याल रहे कि येह सिफ़ात तमाम सहाबा में थीं मगर हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह में अ़ला वज़्हल कमाल (या'नी कामिल तौर पर) थीं और हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह में अमानत दारी के सिवा और बहुत सिफ़ात थीं मगर येह सिफ़त नुमायां थी इस लिये फ़रमाया कि इस उम्मत के अमीन अबू उबैदा हैं लिहाज़ा इस से न तो येह लाज़िम है कि बाकी सहाबा अमीन न थे, न येह कि जनाब अबू उबैदा में सिवाए अमानत दारी के और कोई सिफ़त न थी।”²

सय्यिदुना उमर फ़ारूक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़्वाहिश

एक बार अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने दोस्तों के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे, इर्शाद फ़रमाया : “आप लोगों की दिली तमन्ना क्या है ?” किसी ने अर्ज़ की : “मेरी तमन्ना येह है कि काश मेरे पास सोने से भरा हुवा एक कमरा होता और मैं वोह सारा राहे खुदा में लुटा देता।” किसी ने कहा : “काश ! मेरे पास हीरे जवाहिरात से भरा हुवा कमरा होता और मैं उसे राहे खुदा में ख़र्च कर देता।” अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : “काश ! मेरे पास अबू

①..... سنن ترمذی، کتاب المناقب، مناقب معاذین جبل، الحدیث: ۳۸۱۵، ج ۴، ص ۳۳۵

②..... میرआतुल मनाजीह، जि. 8, स. 434

उबैदा जैसे मर्दों से भरा हुवा एक कमरा होता।”¹

फ़िरासते फ़ारूके आ 'जम رضي الله تعالى عنه

सहाबए किराम عليهم الرضوان की कितनी प्यारी और आ'ला सोच थी, न येह शोहरत के तालिब होते न दौलत के, बल्कि दौलत के हुसूल से पहले ही येह हज़रत इस से छुटकारा पाने की तदाबीर सोच लिया करते थे, अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رضي الله تعالى عنه की फ़िरासत पर कुरबान ! आप की तमन्ना कितनी हिकमत भरी है कि माल स-दका करने की तमन्ना करना भी अगर्चे अच्छा है मगर इस का दाइए असर इतना वसीअ नहीं, ज़ियादा से ज़ियादा इस का फ़ाएदा एक फ़र्द या चन्द मख़्सूस अफ़ाद को होगा लेकिन हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه जैसे ज़हीन, दिलैर अफ़ाद से पूरी मिल्लते इस्लामिय्या को फ़ाएदा पहुंचेगा और इस्लाम की तरवीजो इशाअत का बाइस बनेगा।

मन्सबे ख़िलाफ़त सोंपने की आरज़ू

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ 'जम رضي الله تعالى عنه हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه के इन्तिज़ामी उमूर को चलाने और अपने मा तहत्तों के साथ हुस्ने सुलूक जैसे तमाम मुआ-मलात से भी आगाह थे, बारगाहे रिसालत से आप رضي الله تعالى عنه को जो मर्तबा मिला था उस से भी बा ख़बर थे, इसी वजह से आप رضي الله تعالى عنه ने वक्ते विसाल अपनी तमन्ना का

[1].....الرياض النضرة، ج ٢، ص ٣٥١

इज़हार कुछ यूँ फ़रमाया : “अगर अबू उबैदा ज़िन्दा होते तो मैं अपने बा'द उन्हें ख़लीफ़ा बना देता, अगर मेरा रब कल क़ियामत में मुझ से अबू उबैदा को ख़लीफ़ा बनाए जाने के बारे में पूछता कि तू ने अबू उबैदा को क्यूँ ख़लीफ़ा बनाया ? तो मैं कहता : “ऐ मेरे प्यारे रब صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़बाने हक़ तरजुमान से सुना है कि हर उम्मत का एक अमीन होता है और इस उम्मत का अमीन अबू उबैदा है।”¹

ख़लीफ़ा के लिये इन्तिखाब

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मुलैका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से पूछा गया कि अगर रसूलुल्लाह صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ किसी को खुद ख़लीफ़ा बनाते तो किसे बनाते ? फ़रमाया : “मेरे वालिदे गिरामी या'नी हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को।” फिर पूछा : इन के बा'द ? फ़रमाया : “उमर को।” पूछा गया : इन के बा'द किसे बनाते ? फ़रमाया : “अबू उबैदा बिन ज़र्रह को।”²

शारेहे सहीह मुस्लिम हज़रते सय्यिदुना अबू ज़-करिय्या यहूया बिन शरफ़ न-ववी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : इस हदीस में अहले सुन्नत के इस मौक़िफ़ की दलील है कि हज़रते अबू बक्र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िलाफ़त पर कोई

[1].....تاريخ الاسلام للذهبي، الجزء الثالث، ج 3، ص 142

[2].....صحیح مسلم، فضائل الصحابة، من فضائل ابی بکر صدیق، الحدیث: 2385، ص 1300

वाजेह नस्स नहीं, बल्कि मन्सबे ख़िलाफ़त आप رضي الله تعالى عنه के सिपुर्द किये जाने पर सहाबए किराम عليهم الرضوان का इज्माअ था और आप رضي الله تعالى عنه को (ख़िलाफ़त के मुआ-मले में) मुक़द्दम रखना आप رضي الله تعالى عنه की फ़ज़ीलत के सबब से था। अगर अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिदीक رضي الله تعالى عنه या किसी और की ख़िलाफ़त पर नबिय्ये करीम صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की जानिब से कोई सराहत होती तो सहाबए किराम عليهم الرضوان के माबैन कभी नज़ाअ न होता।¹

हकीमुल उम्मत मुफ़ती अहमद यार ख़ान नईमी عليه رحمة الله القوي इस हदीस के तहूत फ़रमाते हैं : येह हज़रते आइशा सिदीका صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का अपना अन्दाज़ा है कि अगर हुज़ूर صلى الله تعالى عليه وآله وسلم अपने बा'द खु-लफ़ा तरतीब वार मुक़रर फ़रमाते तो पहले हज़रते अबू बक्र सिदीक رضي الله تعالى عنه को मुक़रर करते, फिर हज़रते उमर फ़ारूक رضي الله تعالى عنه को, फिर हज़रते अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه को क्यूं कि हज़रते अबू उबैदा رضي الله تعالى عنه में ख़िलाफ़त की तमाम सलाहिyyतें अमानत दारी, सियासत दानी वगैरा सब अ़ला वज्हिल कमाल (या'नी कामिल तौर पर) मौजूद थीं।²

आप की शराफ़त

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضي الله تعالى عنه से मरवी है कि

..... صحيح مسلم بشرح النووي، كتاب فضائل الصحابه، باب من فضائل ابي بكر الصديق،

ج ٨، الجزء الخامس عشر، ص ٥٥

[2]..... मिरआतुल मनाजीह, जि. 8, स. 435

शहन्शाहे मदीना, करारे कल्बो सीना صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : “अबू बक्र अच्छे आदमी हैं, उमर अच्छे आदमी हैं, अबू उबैदा बिन जर्हाह अच्छे आदमी हैं, उसैद बिन हुज़ैर, साबित बिन कैस बिन शम्मास, मुआज़ बिन जबल मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह येह सारे भी अच्छे हैं।¹

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़ती अहमद यार ख़ान عليه رضى الله عنه इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं कि ग़ालिबन येह हज़रात एक मज्मअ में जम्अ होंगे कि हुजूरे अन्वर صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इन सब को इस करम नवाज़ी से नवाज़ा कि इन के फ़ज़ाइल जम्अ फ़रमाए।²

जन्तती होने की सनद

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि अल्लाह عز وجل के महबूब, दानाए गुयूब صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : “अबू बक्र जन्तती हैं, उमर जन्तती हैं, उस्मान जन्तती हैं, अली, तल्हा, जुबैर, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, सा'द बिन अबी वक्कास, सईद बिन जैद और अबू उबैदा बिन जर्हाह येह सब जन्तती हैं।³

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़ती अहमद यार ख़ान عليه رضى الله عنه इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं कि येह वोह हदीस है जिस की बिना पर इस मुबारक जमाअत को अ-श-रए मुबशशरह कहा जाता है। या'नी एक हदीस में इन दस को नाम बनाम जन्तत

[1]..... سنن الترمذی، کتاب المناقب، مناقب معاذ بن جبل، الحدیث: ۳۸۲، ج ۵، ص ۲۳۷

[2]..... میر آتول मनाजीह، जि. 8, स. 545

[3]..... سنن الترمذی، کتاب المناقب، مناقب عبد الرحمن بن عوف، الحدیث: ۳۷۸، ج ۵، ص ۲۱۶

की बिशारत दी गई। वरना हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का हर सहाबी मुबशशर बिल जन्नत है, रब عَزَّوَجَلَّ (पारह 5 सू-रतुन्निसाअ, आयत : 95 में इर्शाद) फ़रमाता है : وَعَدَّ اللهُ الْحُسْنَى : (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह ने सब से भलाई का वा'दा फ़रमाया) इन नामों की येह तरतीब खुद हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ही दी है रावी ने नहीं दी इसी तरतीब से इन के द-रजात हैं।¹

कजावे की चटाई और पालान का तक्या

हज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन उर्वह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन ज़र्राह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास तशरीफ़ ले गए, देखा कि वोह कजावे की चटाई पर पालान को तक्या बनाए लैटे हैं। हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : “ऐ अबू उ़बैदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ! तुम दूसरों की तरह आराम देह बिस्तर पर क्यूं नहीं लैटते ?” अर्ज़ की : “ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ! मेरे आराम के लिये येही काफ़ी है।”²

घर का कुल सामान सिर्फ़ तीन चीज़ें

हज़रते सय्यिदुना मा'मर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अपनी रिवायत में बयान करते हैं कि जब अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर

[1]..... मिरआतुल मनाजीह, जि. 8, स. 436

[2]..... مصنف ابن ابى شيبه، كتاب الزهد، كلام ابى عبدة بن الجراح، الحديث: 1، ج 8، ص 143

फ़ारूक رضي الله تعالى عنه मुल्के शाम तशरीफ़ लाए तो वहां के खास व आम तमाम लोगों ने आप رضي الله تعالى عنه का इस्तिक्बाल किया, आप رضي الله تعالى عنه ने दरयाफ़्त फ़रमाया : “मेरा भाई कहां है ?” लोगों ने पूछा : “कौन ?” फ़रमाया : “अबू उबैदा बिन जराह (رضي الله تعالى عنه) ।” लोगों ने अर्ज़ की : “वोह अभी थोड़ी ही देर में आप رضي الله تعالى عنه के पास पहुंच जाएंगे । फिर जब अबू उबैदा رضي الله تعالى عنه अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رضي الله تعالى عنه के पास हाज़िर हुए तो आप رضي الله تعالى عنه सुवारी से उतरे और सलाम किया, ख़ैरिय्यत वग़ैरा दरयाफ़्त की और उन के घर तशरीफ़ ले गए । अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رضي الله تعالى عنه ने उन के घर में सिर्फ़ तीन चीज़ें तलवार, तीरों का तरकश और कजावा देखा ।”¹

हज़रते उमर की आप को नसीहत

हज़रते सय्यिदुना तारिक बिन शिहाब عليه رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب से मरवी है कि जब अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رضي الله تعالى عنه मुल्के शाम तशरीफ़ लाए । रास्ते में एक दरयाई गुज़र गाह पर पहुंचे तो आप رضي الله تعالى عنه अपने ऊंट से उतरे, जूते उतार कर हाथ में पकड़े और ऊंट को साथ लिये पानी में उतर गए । अबू उबैदा رضي الله تعالى عنه ने अर्ज़ की : “आज आप رضي الله تعالى عنه ने अहले ज़मीन के नज़्दीक बहुत बड़ा काम किया (या’नी येह आप के शायाने शान नहीं) आप رضي الله تعالى عنه ने अबू उबैदा رضي الله تعالى عنه के सीने पर हाथ

1.....الزهدي للإمام أحمد بن حنبل، أخبار وعبيدة بن الجراح، الحديث: ١٠٢٩، ص ٢٠٣

मारा और फ़रमाया : “ऐ अबू उबैदा ! काश ! येह बात तुम्हारे इलावा कोई और कहता, बेशक तुम अरब लोग इन्सानों में से ज़लील तरीन लोग थे फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दीने इस्लाम के सदके तुम को मुअज़्ज़ज तरीन बना दिया लिहाज़ा जब भी तुम इसे छोड़ कर कहीं और इज़्ज़त तलाश करोगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें ज़िल्लत व ख़वारी में मुब्तला कर देगा ।”¹

अमीरुल उम्मत का ज़बए ईसार

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رضي الله تعالى عنه ने एक थेली में चार सो दीनार डाल कर गुलाम को दिये और फ़रमाया : “इन्हें हज़रते अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه के पास ले जाओ फिर कुछ देर वहां ठहरना और देखना कि वोह इन्हें कहां सर्फ़ करते हैं ।” चुनान्चे, गुलाम वोह थेली ले कर अमीनुल उम्मत हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه के पास हाज़िर हुवा और अर्ज की : “अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رضي الله تعالى عنه ने फ़रमाया है कि येह दीनार अपनी किसी ज़रूरत में इस्ति'माल कर लें ।” आप رضي الله تعالى عنه ने कहा : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अमीरुल मुअमिनीन पर रहूम फ़रमाए ।” फिर अपनी लौंडी को बुलाया और फ़रमाया : “येह सात दीनार फुलां को, येह पांच फुलां को और येह पांच फुलां को दे आओ ।” यहां तक कि वोह सब के सब दीनार ख़त्म कर दिये । गुलाम ने अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना

1..... شعب الایمان للبيهقي، باب في حسن الخلق، الحديث: ٨١٩٦، ج ٦، ص ٢٩١

उमर फ़ारूक رضي الله تعالى عنه की खिदमत में हाज़िर हो कर सारी सूरते हाल बयान कर दी।”

फिर अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رضي الله تعالى عنه ने इतने ही दीनार एक और थेली में डाल कर गुलाम के हवाले किये और फ़रमाया : “येह हज़रते मुअज़ बिन जबल رضي الله تعالى عنه के पास ले जाओ और कुछ देर वहां ठहरना और देखना कि वोह इन्हें कहां सर्फ़ करते हैं ?” गुलाम ने थेली ली और हज़रते सय्यिदुना मुअज़ बिन जबल رضي الله تعالى عنه की खिदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : “अमीरुल मुअमिनीन फ़रमाते हैं इस रक़म से अपनी कोई हाज़त पूरी कर लें।” हज़रते सय्यिदुना मुअज़ बिन जबल رضي الله تعالى عنه ने कहा : “अल्लाह عز وجل अमीरुल मुअमिनीन पर रहूम फ़रमाए।” फिर अपनी लौंडी को बुला कर फ़रमाया : “इतने दिरहम फुलां के घर, इतने फुलां के घर पहुंचा दो।”

इसी अस्ना में आप رضي الله تعالى عنه की जौजा को इस बात का इल्म हुवा तो अर्ज़ की : “अल्लाह عز وجل की क़सम ! हम भी मिस्कीन हैं हमें भी अता फ़रमाएं।” उस वक़्त थेली में सिर्फ़ दो दीनार बाकी बचे थे आप رضي الله تعالى عنه ने वोह थेली दीनारों समेत अपनी अहलिया की तरफ़ उछाल दी। गुलाम अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رضي الله تعالى عنه की बारगाह में हाज़िर हुवा और सारा वाकिआ सुनाया। येह सुन कर आप رضي الله تعالى عنه बहुत खुश हुए और फ़रमाया : “बेशक तमाम सहाबा आपस में भाई भाई हैं।”¹

[1]..... الزهد للإمام أحمد بن حنبل، أخبار الحسن بن أبي الحسن، الحديث: ١٥٢٢، ص ٢٨٣، بتغير

दुनिया अपने जाल में न फंसा सकी

एक रिवायत में यूँ है कि अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رضي الله تعالى عنه ने हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه से फ़रमाया : “कुछ रोटी खिलाओ ।” आप رضي الله تعالى عنه ने अपने थेले से रोटी के कुछ सूखे टुकड़े निकाल कर पेश किये । अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رضي الله تعالى عنه ने येह देखा तो आबदीदा हो गए और रोते हुए इर्शाद फ़रमाया : “ऐ अबू उबैदा ! तुम्हें दुनिया अपने जाल में न फंसा सकी ।”¹

काश ! मैं कोई मेंढा होता

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जन्नत की सनद अता हो जाने के बा वुजूद तमाम सहाबए किराम عليهم الرضوان कभी भी अल्लाह की खुफ़्या तदबीर से गाफ़िल न हुए बल्कि कियामत की होल नाकियां, मैदाने महशर की वहशतें और आ'माल का एहतिसाब येह तमाम उमूरे आख़िरत इन्हें किसी वक़्त चैन न लेने देते । हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه की भी येही कैफ़ियत रहती । चुनान्चे आप رضي الله تعالى عنه पर जब ख़ौफ़े खुदा का ग़-लबा होता, दुनिया की आज़माइशी ज़िन्दगी और इस के फ़ितनों को देखते तो बे साख़्ता पुकार उठते : “काश ! मैं कोई मेंढा होता जिसे घर वाले ज़ब्ह करते और (पका पर) उस का गोश्त खा लेते और शोरबा पी लेते ।”²

[1].....مراقبة المفاتيح، كتاب المناقب، باب مناقب العشرة المبشرة، تحت الحديث: ٢١٢٠، ج ١٠، ص ٩٣

[2].....تاريخ مدينة دمشق، ج ٢٥، ص ٢٨٢

मैं खाल का कोई हिस्सा होता !

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رضي الله تعالى عنه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه ने फ़रमाया : “कोई गोरा हो या काला, आज़ाद हो या गुलाम, अ-जमी हो या अ-रबी जिस के मु-तअल्लिक़ मुझे मा'लूम हो कि वोह तक्वा व परहेज़ गारी में मुझ से बढ़ कर है तो मैं येह पसन्द करता हूँ कि मैं उस की खाल का कोई हिस्सा होता ।”¹

क़ब्रों हशर की होल नाकियां

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 504 सफ़हात पर मुशतमिल किताब ग़ीबत की तबाह कारियां के सफ़हा 67 पर है :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाकेई आख़िरत का मुआ-मला बेहद तश्वीश नाक है, क्या मा'लूम आज ही मौत आ जाए और देखते ही देखते हम अंधेरी क़ब्र में जा पहुंचें, अक्वल तो मौत का तसव्वुर ही जान को घुलाने वाला है और साथ ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की नाराज़ी की सूरत में खुदा न ख़्वास्ता जहन्म में डाल दिये गए तो उस का होलनाक अज़ाब कैसे बरदाश्त करेंगे ।

फ़िक्रे मआश बद बला होले मआद जां गुज़ा

ताख़ों बला में फंसने को रूह बदन में आई क्यूं

..... الزهد للإمام احمد بن حنبل، أخبار عبيدة بن الجراح، الحديث: ١٠٢٤، ص ٢٠٣

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عليه رحمة الرحمن फ़तावा र-जविय्या जि. 9 स. 934 ता 937 पर मुर्दे की बे बसी की कुछ यूं मन्ज़र कशी फ़रमाते हैं : वोह मौत का ताज़ा सदमा उठाए हुए रूह (कि निकलते वक़्त) जिस का अदना झटका सो ज़र्बे शमशीर (या'नी तलवार के सो वार) के बराबर, जिस का सदमा हज़ार ज़र्बे तैग़ (या'नी तलवार के हज़ार वार) से सख़्त तर, बल्कि म-लकुल मौत (عليه السلام) का देखना ही हज़ार तलवार के सदमे से बढ़ कर । वोह नई जगह, वोह निरी तन्हाई, वोह हर तरफ़ भयानक बे कसी छई, इस पर वोह नकीरैन (या'नी मुन्कर नकीर) का अचानक आना, वोह सख़्त हैबत नाक सूरतें दिखाना कि आदमी दिन को हज़ारों के मज्मअ में देखे तो हवास बजा न रहें । काला रंग, नीली आंखें देगों के बराबर बड़ी अबरक़ (चमकीली धात) की तरह शो'ला ज़न, सांस जैसे आग की लपट, बैल के सींगों की तरह लम्बे नोकदार कीले (या'नी अगले दांत), ज़मीन पर घिसटते सर के पेचीदा बाल, क़दो क़ामत जिस्मो जसामत बला व क़ियामत कि एक शाने (या'नी कन्धे) से दूसरे (कन्धे) तक मन्ज़िलों (या'नी बे शुमार किलो मीटर्ज़) का फ़ासिला, हाथों में लोहे का वोह गुर्ज़ (या'नी हथोड़ा) कि अगर एक बस्ती के लोग बल्कि जिन्नो इन्स जम्अ हो कर उठाना चाहें न उठा सकें, वोह गरज कड़क की होलनाक आवाजें, वोह दांतों से ज़मीन चीरते ज़ाहिर होना, फिर इन आफ़ात पर आफ़त येह कि सीधी तरह बात न करना, आते ही झन्झोड़ डालना, मोहलत न देना, कड़क्ती झिड़क्ती आवाजों में इम्तिहान लेना ।

وَحَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ اِرْحَمْ صُغْفَانَا يَا كَرِيمُ يَا جَمِيلُ صَلَّى وَسَلَّمَ عَلَيَّ
نَبِيِّ الرَّحْمَةِ وَالِاهِ الْكَرَامِ وَسَائِرِ الْأُمَّةِ آمِينَ آمِينَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ۔

तरजमा : और अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) हमारे लिये काफी है और वोह सब से बड़ा कारसाज है। ऐ करम फ़रमाने वाले ! हमारी कमजोरी पर रहमो करम फ़रमा, ऐ रब्बे जमील ! दुरुदो सलाम भेज नबिय्ये रहमत (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْإِهِ وَسَلَّمَ) पर और इन की इज़्ज़त वाली आल और बकिय्या तमाम उम्मत पर। क़बूल फ़रमा, क़बूल फ़रमा, ऐ सब से ज़ियादा रहमो करम फ़रमाने वाले !

खड़े हैं मुन्कर नकीर सर पर न कोई हामी न कोई यावर
बता दो आ कर मेरे पयम्बर कि सख़्त मुश्किल जवाब में है

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

अच्छ मश्वरा क़बूल कर लिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज अगर हमें कोई जिम्मेदारी दे दी जाए तो हमारे रवय्ये में बहुत तब्दीली आ जाती है अपने मा तहत इस्लामी भाइयों की बात तक सुनना गवारा नहीं करते और ज़ेहन में येही ग़लत ख़याल गर्दिश करता रहता है कि मेरी बात बिल्कुल हत्मी है, मेरा फैसला बिल्कुल अटल है, मा तहत अगर कोई अच्छा मश्वरा दे तो उसे बिल्कुल नज़र अन्दाज़ कर देते हैं बल्कि बसा अवकात तो उन की दिल शिकनी भी कर बैठते हैं लेकिन हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه की सीरत के इस अज़ीम गोशे को भी मुला-हज़ा कीजिये कि सिपह सालार और बा

इख़्तियार होने के बा वुजूद हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ تعالیٰ عنہ की बयान कर्दा जंगी हिक़्मतें अ-मली को बग़ौर सुन कर न सिर्फ़ उस की इजाज़त अता फ़रमाई बल्कि खुशी का इज़हार करते हुए उन की हौसला अफ़ज़ाई भी फ़रमाई हालां कि वोह आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ के मा तहूत थे । चुनान्चे,

एक बार हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने फ़ुतूहाते शाम में रूमियों के गुरूरो तकब्बुर को तोड़ने के लिये इल्मे नफ़िसय्यात का इस्ति'माल करते हुए एक नई तदबीर अमल में लाते हुए तमाम गुलामों को जम्अ किया, इस्लामी लश्कर में गुलामों की ता'दाद चार हज़ार थी हज़रते ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने उन सब को मुसल्लह हो कर क़ल्ए की तरफ़ जाने और हम्ला करने का हुक्म दिया । जब हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضی اللہ تعالیٰ عنہ को पता चला तो मु-तअज्जिब हो कर पूछने लगे : “ऐ अबू सुलैमान ! ग़ालिबन तुम्हारी इस तच्चीज़ से लड़ाई का मक्सद हासिल न होगा, येह चार हज़ार गुलाम क़ल्ए पर हम्ला कर के फ़त्ह हासिल नहीं कर सकते ।”

हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने मुअद्बाना लहजे में जवाब देते हुए अर्ज़ किया : “ऐ सरदार ! आप मुझे इस की इजाज़त अता फ़रमाएं मैं गुलामों को क़ल्अ फ़त्ह करने की गरज़ से नहीं भेज रहा बल्कि बन्द लफ़जों में उन को येह पैग़ाम देना चाहता हूं कि ऐ सलीब के पुजारियो ! हमारी निगाहों में तुम्हारी कोई वक़अत नहीं हमारे नज़्दीक तुम्हारी इतनी भी अहम्मियत नहीं कि

तुम्हारे जैसे ज़लीलों और बुज़दिलों से हम खुद लड़ने निकलने की ज़हमत गवारा करें तुम्हारी ज़िल्लत और सफ़ाहत को मद्दे नज़र रखते हुए हम ने अपने गुलामों को तुम्हारे मुक़ाबले में भेजा है।” हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه ने हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضي الله تعالى عنه की इस तच्चीज़ को बहुत पसन्द फ़रमाया और खुश हो कर उन्हें इस की इजाज़त मर्हमत फ़रमाई।¹

अमीरुल मुअमिनीन की ख़िदमत में मक्तूब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाकेई हमारे अस्लाफ़ न तो हक़ बात को क़बूल करने में कोई आ़र महसूस करते और न ही हक़ बात कहने में कोई आ़र महसूस करते बल्कि अगर सामने कोई बड़े से बड़ा ओहदे दार भी होता तो बिला झिजक उस से अपने दिली जज़्बात का इज़हार कर देते। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सूका رضمة الله تعالى عنه फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते नुऐम बिन अबी हिन्द رضمة الله تعالى عنه के पास आया तो उन्होंने ने मुझे एक काग़ज़ निकाल कर दिखाया जिस पर लिखा था : “येह ख़त अबू उबैदा बिन जराह व मुआज़ बिन जबल رضي الله تعالى عنهما की तरफ़ से अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رضي الله تعالى عنه की तरफ़ है।”

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ ! हम्दो सना के बा’द ! हम दोनों आप رضي الله تعالى عنه की ख़िदमत में अर्ज़ करते हैं कि “जो मुआ-मला (या’नी

1.....فتوح الشام، الجزء الاول، ص 133

खिलाफत) आप के सिपुर्द किया गया है वोह अहम तरीन है, आप को इस उम्मत के सुख व सियाह की जिम्मेदारी सोंपी गई है, आप के पास मुअज़्ज़ज व हकीर, दुश्मन व दोस्त सभी फैसले करवाने आएंगे और अदलो इन्साफ़ हर एक का हक़ है। ऐ उमर ! गौर कर लीजिये कि उस वक़्त आप की क्या कैफ़ियत होगी। हम आप को उस दिन से डराते हैं जिस दिन लोगों के चेहरे झुक जाएंगे, दिल कांप उठेंगे और तमाम हुज्जतें ख़त्म हो जाएंगी। सिर्फ़ एक बादशाहे हकीकी अल्लाहु रब्बुल आ-लमीन عَزَّوَجَلَّ की हुज्जत अपने जबरूत के साथ ग़ालिब होगी और मख़्लूक उस के सामने हकीर होगी, उस की रहमत की उम्मीद और अज़ाब का ख़ौफ़ होगा और हम आपस में गुफ़्त-गू करते हैं कि आख़िरी ज़माने में इस उम्मत का हाल ऐसा हो जाएगा कि लोग ज़ाहिरी तौर पर तो एक दूसरे के भाई बनेंगे और दिली तौर पर दुश्मन होंगे हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं इस बात से कि येह ख़त आप को हमारी तरफ़ से वोह बात पहुंचाए जो हमारे दिलों में नहीं, हम ने महज़ आप की ख़ैर ख़्वाही के लिये आप को येह ख़त लिखा है। **وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ**

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رضي الله تعالى عنه ने इस ख़त का जवाब यूं दिया : येह तहरीर उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله تعالى عنه) की तरफ़ से अबू उबैदा बिन जराह और मुअज़्ज़ बिन जबल (رضي الله تعالى عنهما) की तरफ़ है।

وَالسَّلَامُ عَلَيْكُمْ : हमदो सना के बा'द ! मुझे आप लोगों का

ख़त मिला जिस में आप ने वसियत की है कि “मेरा मुआ-मला सख़्त तर है और मुझे इस उम्मत के सुख़ व सियाह की विलायत सोंपी गई है, मेरे सामने शरीफ़ व ज़लील (या'नी घटिया), दुश्मन व दोस्त आएंगे, बेशक हर शख़्स का अदल में हिस्सा है।” आप दोनों ने लिखा है कि “ऐ उमर ! उस वक़्त तुम्हारी क्या हालत होगी।” बेशक उमर को इताअत की तौफ़ीक़ और मा'सियत से बचने की कुव्वत देने वाला सिर्फ़ अल्लाह ﷻ है और आप लोगों ने मुझे लिखा है कि “आप लोग मुझे उस मुआ-मले से डराते हैं जिस से साबिका उम्मतें डराई जाती रहीं।” पहले ही रात और दिन के बदलने ने लोगों की अम्वात के साथ हर दूर को करीब और हर नए को पुराना कर दिया है नीज हर आने वाले को हाज़िर कर दिया है यहां तक कि लोग अपने ठिकाने जन्नत या दोज़ख़ की तरफ़ चले गए। फिर आप दोनों ने इस बात का भी इज़हार किया है कि “आख़िरी ज़माने में इस उम्मत का येह हाल होगा कि लोग ब जाहिर भाई भाई और दिल से एक दूसरे के दुश्मन होंगे।” लेकिन आप लोग तो ऐसे नहीं और न ही येह वोह ज़माना है क्यूं कि इस ज़माने में अल्लाह ﷻ की तरफ़ रग़बत और उस का ख़ौफ़ जाहिर है, लोग इस्लाहे दुन्या के लिये एक दूसरे की तरफ़ रग़बत करते हैं। और आख़िर में तहरीर किया कि “आप अल्लाह ﷻ की पनाह मांगते हैं इस बात से कि मैं येह ख़त पढ़ कर वोह मफ़हूम लूं जो आप के दिलों में नहीं है जब कि आप ने तो ख़ैर ख़्वाही के लिये लिखा है।” आप दोनों ने सच कहा है। मुझे

आयिन्दा भी आप के ख़त का इन्तिज़ार रहेगा, मैं आप हज़रत (की ख़ैर ख़्वाही) से बे नियाज़ नहीं हूँ।" **۱ وَالسَّلَامُ عَلَیْكُمْ ۱**

ओहदा लिये जाने पर हम्दे इलाही

हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन अ़ास **رضی اللہ تعالیٰ عنہ** को जब फ़िलिस्तीन में फ़तह हासिल हुई तो आप **رضی اللہ تعالیٰ عنہ** ने अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक **رضی اللہ تعالیٰ عنہ** और अपने सिपह सालार हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन ज़र्राह **رضی اللہ تعالیٰ عنہ** को तमाम तफ़सीलात से आगाह करने के लिये हज़रते सय्यिदुना अ़ामिर बिन दौसी **رضی اللہ تعالیٰ عنہ** के हाथ एक मक्तूब रवाना किया, सब से पहले येह मक्तूब अमीरुल मुअमिनीन को पहुंचा आप **رضی اللہ تعالیٰ عنہ** ने वोह ख़त पढ़ कर मुसल्मानों को सुनाया, मुसल्मान येह सुन कर खुशी से तकबीर व तहलील के ना'रे लगाने लगे। आप ने हज़रते सय्यिदुना अ़ामिर **رضی اللہ تعالیٰ عنہ** से शाम की कैफ़ियत मा'लूम की, चूंकि उस वक़्त शाम मुख़लिफ़ फ़ितनों की लपेट में था हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन ज़र्राह **رضی اللہ تعالیٰ عنہ** निहायत ही मुत्तकी और परहेज़ गार नीज़ सीधे सादे थे और इन फ़ितनों को समझना निहायत दुश्वार था इस लिये अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक **رضی اللہ تعالیٰ عنہ** ने अकाबिर सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** की मुशा-वरत से हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन ज़र्राह **رضی اللہ تعالیٰ عنہ** की जगह हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद

.....[المصنف لابن ابی شیبہ، کتاب الزهد، کلام عمر بن الخطاب، الحدیث: ۱۰، ج ۸، ص ۱۲۸]

رضي الله تعالى عنه को सिपह सालार मुकरर फरमा दिया। जब हजरते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه को येह खबर पहुंची तो आप رضي الله تعالى عنه बहुत खुश हुए और अल्लाह عز وجل का शुक्र अदा करते हुए इर्शाद फरमाया : “तमाम ता’रीफें अल्लाह के लिये हैं, इताअत तो अल्लाह عز وجل और रसूलुल्लाह صلى الله تعالى عليه وآله وسلم के खलीफा के लिये है।” फिर आप رضي الله تعالى عنه ने हजरते सय्यिदुना खालिद बिन वलीद رضي الله تعالى عنه की तकरुरी की खबर खुद जा कर मुसल्मानों को सुनाई।¹

अमीनुल उम्मत और सैफुल्लाह का म-दनी मुका-लमा

अमीरुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رضي الله تعالى عنه के इस हुकम नामे के मौसूल होने के बा’द जब हजरते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه इस्लामी लश्कर के साथ उस मक़ाम पर पहुंचे जहां सैफुल्लाह हजरते सय्यिदुना खालिद बिन वलीद رضي الله تعالى عنه अपने लश्कर के साथ रूमियों से बर-सरे पैकार थे, चूंकि उस वक़्त हजरते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه सुवार थे आप ने अपने घोड़े से उतरना चाहा मगर हजरते सय्यिदुना खालिद बिन वलीद رضي الله تعالى عنه ने कसम दे कर उतरने से मन्अ कर दिया हजरते सय्यिदुना खालिद बिन वलीद رضي الله تعالى عنه आप से बहुत महब्बत किया करते थे, दोनों ने एक दूसरे से गर्म-जोशी से मुसा-फ़हा किया, हजरते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه ने गुफ़्त-गू का आगाज़ करते हुए फरमाया :

1...فتح الشام، خالد بن وليد في الشام، الجزء الاول، ص ٢٣٦٢٠ ملخصاً

ऐ अबू सुलैमान ! जब अमीरुल मुअमिनीन رضي الله تعالى عنه के मक्तूब के जरीए येह ख़बर मिली कि आप को सिपह सालार मुकर्रर कर दिया गया है तो मुझे बे पनाह खुशी हुई, मैं आप की जंगी महारत से बख़ूबी आगाह हूं, मेरे दिल में तो आप के लिये ज़रा बराबर कीना नहीं। हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضي الله تعالى عنه ने कहा : बख़ुदा ! मैं कोई भी फैसला आप से मुशा-वरत किये बिगैर नहीं करूंगा, खुदा की क़सम ! अगर अमीरुल मुअमिनीन का हुक़म न होता तो मैं आप के होते हुए कभी भी येह मन्सब क़बूल न करता, क्यूं कि आप मुझ से पहले ईमान लाए हैं, आप तो ऐसे सहाबिये रसूल हैं कि बारगाहे रिसालत से अमीनुल उम्मत होने की सनद हासिल है। फिर हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضي الله تعالى عنه भी घोड़े पर सुवार हो कर हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जर्हाह رضي الله تعالى عنه को साथ ले कर लश्कर की क़ियाम गाह की तरफ़ चल पड़े।¹

ओहदा ले कर आज़माइश

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई जब किसी को आज़माया जाता है तो ओहदा दे कर नहीं बल्कि ले कर आज़माया जाता है, सहाबए किराम عليهم الرضوان अव्वलन तो किसी भी दुन्यावी ओहदे की ख़्वाहिश ही न फ़रमाते बल्कि इस से दूर भागते और बिलफ़र्ज कभी उन्हें कोई ओहदा दे दिया जाता तो उसे मुकम्मल एहसासे ज़िम्मेदारी से निभाते और जब वोह ओहदा ले लिया जाता तो इस पर नाराज़ होने के बजाए अल्लाह عزّوجلّ का शुक्र अदा करते

[1].....فتوح الشام، الجزء الاول، ص ۳۵ ملخصاً

और इस तरह खुश होते जैसे कोई बहुत बड़ा बोझ इन के सर से उतार दिया गया हो, मगर अफ़सोस ! आज हमारी हालत तो येह है ओहदों के पीछे ऐसे भागते फिरते हैं जैसे आखिरत में काम्याबी का दारो मदार ही इसी पर है और जब ओहदा मिल जाए तो शायद ही एहसासे ज़िम्मेदारी से उसे पूरा करने की कोशिश करते हों, नीज़ जब वोह ओहदा ले लिया जाए तो गीबतों, तोहमतों, बोहतानों के अम्बार लग जाते हैं, काश ! हम भी सहाबए किराम عليهم الرضوان की सीरत पर आमिल हो जाएं और कोई ओहदा मिले या न मिले हमारे कुलूब गीबत, तोहमत, बोहतान वगैरा बातिनी अमराज़ से पाक ही रहें ।

आप की करामत, बे मिसाल मछली

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 342 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “करामाते सहाबा” सफ़हा 140 पर है : “आप (या'नी हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه) तीन सो मुजाहिदीने इस्लाम के लश्कर पर सिपह सालार बन कर सैफुल बहूर में जिहाद के लिये तशरीफ़ ले गए । वहां फ़ौज का राशन ख़त्म हो गया यहां तक कि येह चौबीस चौबीस घन्टे में एक एक खज़ूर बतौरे राशन के मुजाहिदीन को देने लगे । फिर वोह खज़ूरें भी ख़त्म हो गईं । अब भुक-मरी (या'नी भूक से मर जाने) के सिवा कोई चारए कार नहीं था । इस मौक़अ पर आप की येह करामत ज़ाहिर हुई कि अचानक समुन्दर की तूफ़ानी मौजों ने

साहिल पर एक बहुत बड़ी मछली को फेंक दिया और उस मछली को येह तीन सो मुजाहिदीन की फ़ौज अठ्ठारह दिनों तक शिकम सैर हो कर खाती रही और उस की चरबी को अपने जिस्मों पर मलती रही यहां तक कि सब लोग तन्दुरस्त और ख़ूब फ़रबा हो गए। फिर चलते वक़्त उस मछली का कुछ हिस्सा काट कर अपने साथ ले कर मदीनए मुनव्वरह वापस आए और हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमते अक्दस में भी उस मछली का एक टुकड़ा पेश किया। जिस को आप ने तनावुल फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया कि इस मछली को अल्लाह तआला ने तुम्हारा रिज़्क बना कर भेज दिया। येह मछली कितनी बड़ी थी लोगों को इस का अन्दाज़ा बताने के लिये अमीरे लश्कर हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्हाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हुक्म दिया कि इस मछली की दो पस्लियों को ज़मीन में गाड़ दें। चुनान्चे दोनों पस्लियां ज़मीन पर गाड़ दी गईं तो इतनी बड़ी मेहराब बन गई कि उस के नीचे से कजावा बंधा हुवा ऊंट गुज़र गया।¹

एक करामत के ज़िम्न में कई करामतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ऐसे वक़्त में जब कि लश्कर में ख़ूराक का सारा सामान ख़त्म हो चुका था और लश्कर के सिपाहियों के लिये भूक से मर जाने के सिवा कोई चारा ही नहीं था बिल्कुल ही ना गहां बिगैर किसी मेहनतो मशक्कत के उस मछली का खुशकी में मिल जाना इस को करामत ही कहा जा सकता है। फिर इतनी बड़ी

1] صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوة سيف البحر... الخ، الحدیث: ۲۳۶۰، ۲۳۶۱

मछली कि तीन सो भूके सिपाहियों ने उस मछली को काट काट कर अठ्ठारह दिनों तक ख़ूब शिकम सैर हो कर खाया, येह एक दूसरी करामत है। फिर मछली एक ऐसी चीज़ है कि मरने के बा'द दो चार दिनों में सड़ गल कर और पानी बन कर बह जाती है मगर आदते जारिया के ख़िलाफ़ महीनों तक येह मरी हुई मछली ज़मीन पर धूप में पड़ी रही फिर भी बिल्कुल ताज़ा रही न उस में बदबू पैदा हुई न उस का मज़ा तब्दील हुवा, येह तीसरी करामत है। गरज़ इस अज़ीबो ग़रीब मछली का मिल जाना इस एक करामत के ज़िम्न में चन्द करामतें जाहिर हुई जो बिला शुबा अमीरे लश्कर हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जन्नती सहाबी की बहुत ही अज़ीम और नादिरुल वुजूद करामतें हैं।

صَلُّوا عَلَ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَ مُحَمَّدٍ

अपने मा तह्रतों से दिली महब्बत

मुल्के शाम में जब ताऊन की वबा फेलने लगी तो उस वक़्त मुसलमानों का एक लश्कर उरदन में था जिस के सिपह सालार हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ थे, अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को अपने पास बुलाने के लिये उन की जानिब एक मक्तूब रवाना किया जिस में इर्शाद फ़रमाया : “हमें एक हाज़त दरपेश है जिस में आप से मुशा-वत बहुत ज़रूरी है। लिहाज़ा जैसे ही आप को मेरा येह मक्तूब मौसूल

हो फ़ौरन रखते सफ़र बांध लीजियेगा, अगर रात को मिले तो सुबह का, सुबह मिले तो शाम का इन्तिज़ार न कीजियेगा ।” हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه ने मक्तूब पढ़ा तो फ़ौरन मक्सद समझ गए और फ़रमाने लगे : “मुझे अमीरुल मुअमिनीन की हाजत बख़ूबी मा’लूम है, यकीनन अमीरुल मुअमिनीन उस शख़्स की हयात चाहते हैं जिस की मौत मुक़द्दर है ।” आप رضي الله تعالى عنه ने हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رضي الله تعالى عنه को जवाबन लिखा : “मुझे आप की हाजत का बख़ूबी इल्म है आप मुझे बुलाने का अज़म तर्क फ़रमा दें क्यूं कि मैं मुसलमानों के उस लश्कर में हूं जिसे तन्हा छोड़ना मेरे बस में नहीं है ।” जब हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رضي الله تعالى عنه को यह जवाब मौसूल हुवा तो आप رضي الله تعالى عنه पढ़ कर रोने लगे । (ग़ालिबन आप رضي الله تعالى عنه हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه के सब्रो शुक्र, एहसासे जिम्मेदारी और अपने लश्कर के हमराहियों से उन्सियत व महबबत को देख कर खुशी के आंसू रोए) पूछा गया : “क्या अबू उबैदा इन्तिक़ाल फ़रमा चुके हैं ?” इर्शाद फ़रमाया : “नहीं ।” फिर आप رضي الله تعالى عنه ने एक और मक्तूब आप की जानिब रवाना फ़रमाया जिस का मज़मून कुछ यूं था कि “उरदन शेरों को बीमार करने वाली ज़मीन है और जाबिया की ज़मीन खुश गवार है, आप मुसलमानों को जाबिया ले कर चले जाएं ।” इस मक्तूब को पढ़ते ही हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه ने इर्शाद फ़रमाया : “हम अमीरुल मुअमिनीन के इस

हुक्म की जानो दिल से इताअत करते हैं।”¹

एहसासे जिम्मेदारी के क्या कहने !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه के एहसासे जिम्मेदारी के क्या कहने ! उन के इल्म में येह बात थी कि अमीरुल मुअमिनीन मुझे त़ाऊन की वजह से बुला रहे हैं लेकिन आप رضي الله تعالى عنه ने इस तकलीफ़ को ज़रा भर अहम्मियत न दी और अपने मा तहूत लशकर के मुजाहिदों से जुदाई को गवारा न किया, बल्कि ब तरीके अहसन अमीरुल मुअमिनीन की ख़्वाहिश को वापस लौटा दिया, जभी तो अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رضي الله تعالى عنه ने आप के शौको वल्लले को सराहते हुए दूसरी जानिब कूच का हुक्म दे दिया ।

मुम्किन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो

हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه ने इस्लामी लशकर के साथ मक़ामे शैज़र पर कियाम किया तो रोज़ाना कुछ मुसल्मान लकड़ियां जम्अ करने के लिये जंगल जाया करते और उन को जला कर खाना वगैरा पकाते, एक दिन जब वोह गए तो वापस ही न आए, पता चला कि जबला बिन ऐहम की फ़ौज उन्हें कैदी बना कर ले गई है और उस की फ़ौज की ता'दाद भी अच्छी ख़ासी है । हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه की इजाज़त से हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضي الله تعالى عنه दस सहाबए किराम

1.....المستدرک، کتاب معرفة الصحابة، ذکر وفاة ابی عبيدة، الحديث: ٥١٩٥، ج ٢، ص ٢٩٦

عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को साथ ले कर उन मुसलमान कैदियों को छुड़ाने के लिये निकल खड़े हुए, अभी रास्ते में ही थे कि उन का मुक़ाबला कुफ़्फ़ार के ऐसे लश्कर से हो गया जो तक्रीबन दस हज़ार फ़ौजियों पर मुश्तमिल था, हज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ समेत दस सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ऐसी जवां मर्दी से लड़े कि कुफ़्फ़ार का लश्कर बोखला गया, या'नी एक मुसलमान कुफ़्फ़ार के एक हज़ार के मुक़ाबले पर था, बिल आख़िर मुसलमान लड़ते लड़ते थकन से बे हाल हो गए और कुफ़्फ़ार ब ज़ाहिर उन पर ग़-लबा पाने लगे। ऐन उसी वक़्त मक़ामे शैज़र में अमीरे लश्कर हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने ख़ैमे में आराम फ़रमा रहे थे कि अचानक घबरा कर उठ खड़े हुए और लश्कर को जंग के लिये फ़ौरन तय्यार होने का हुक़्म दिया, इस अचानक हुक़्म से तमाम लोग घबरा गए और आप की खिदमत में अर्ज़ गुज़ार हुए : “हुज़ूर क्या बात है ? आप ने अचानक ही जंग की तय्यारी का हुक़्म दे दिया है।” इर्शाद फ़रमाया : “अभी अभी मैं ने ख़्वाब देखा कि मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब وَالِهِ وَسَلَّمَ ने आ कर जगाया और इर्शाद फ़रमाया : ऐ इब्ने जराह ! तुम सो रहे हो, उठो और ख़ालिद बिन वलीद की मदद के लिये पहुंचो, उन्हें कुफ़्फ़ार ने घेरे में ले लिया है।” यह सुनना था कि पूरे लश्कर ने फ़ौरन तय्यारी शुरू कर दी। जैसे ही हज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास पहुंचे तो कुफ़्फ़ार इस्लामी लश्कर को देख कर भाग खड़े हुए, लेकिन मुसलमानों ने उन का तअक़ुब जारी रखा और इस ज़ोर से हम्ला किया

कि उन के कदम उखड़ गए और उन्हें इब्रत नाक शिकस्त का सामना करना पड़ा, नीज़ तमाम मुसलमान कैदियों को भी छुड़ा लिया गया।¹

फ़रियाद उम्मती जो करे हाले ज़ार में

मुम्किन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ख़ल्वत में फ़िक्रे मदीना

एक शख्स हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह

رضي الله تعالى عنه की ख़िदमत में हाज़िर हुवा तो देखा कि आप رضي الله تعالى عنه रो रहे हैं, उस ने अर्ज़ की : “हुज़ूर ! किस चीज़ ने आप को रुलाया ?”

फ़रमाया : एक दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हाथों होने वाली फुतूहात का ज़िक्र फ़रमा रहे थे, आप ने शाम का ज़िक्र भी फ़रमाया और मुझ से इर्शाद फ़रमाया : “ऐ अबू उबैदा ! अगर मौत तुम से मुअख़्बर कर दी जाए तो तुम्हारे लिये तीन ख़ादिम काफ़ी हैं : (1) एक वोह ख़ादिम जो तुम्हारी ख़िदमत करे (2)

एक वोह जो तुम्हारे साथ सफ़र करे (3) एक वोह जो तुम्हारे अहल

या'नी घर वालों की ख़िदमत करे । इसी तरह तुम्हारे लिये तीन सुवारियां काफ़ी हैं : (1) तुम्हारे सफ़र की सुवारी (2) तुम्हारे बोझ

उठाने वाली सुवारी (3) तुम्हारे गुलाम की सुवारी ।” बस इसी फ़रमान की वजह से मैं रो रहा हूँ क्यूं कि मैं देख रहा हूँ कि मेरा घर

तो छोटी छोटी चीज़ों से भी भरा हुवा है, नीज़ मेरा अस्तबल घोड़ों और ख़च्चरों से पुर है । मुझे येह फ़िक्र खाए जा रही है कि सरकार

1.....فتوح الشام، جيلة يعارب خالد، الجزء الاول، ص 115

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का सामना कैसे करूंगा ? क्यों कि हुजूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया है : “क़ियामत में मुझे सब से ज़ियादा महबूब और मेरे सब से ज़ियादा क़रीब वोह होगा जो मुझ से उसी हाल में मिले जिस हाल में मैं ने उस को छोड़ा था ।”¹

आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की हिक्मते अ-मली

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के ज़मानए ख़िलाफ़त में हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ शाम के वाली थे, जब हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का दौरे ख़िलाफ़त आया तो आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को मा'जूल कर के हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन ज़राह रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को शाम का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा दिया, नई तक्रुरी का येह मक्तूब दौराने जंग मौसूल हुवा था लिहाज़ा हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन ज़राह रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हिक्मते अ-मली का मुज़ा-हरा करते हुए उस को छुपा दिया, जब जंग ख़त्म हुई तो हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को अपनी मा'जूली और हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन ज़राह रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की तक्रुरी का इल्म हुवा, आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन ज़राह रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : “आप ने मुझे उस मक्तूब के मु-तअल्लिक़ क्यों नहीं बताया जिस में आप की तक्रुरी का हुक्म था,

[1].....کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث: ۳۶۵۸، ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۹۳

الرياض النضرة، ج ۲، ص ۳۵۳

गवर्नरी का ओहदा आप के पास था आप फिर भी मेरे पीछे नमाज़ पढ़ते रहे?" हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जर्हाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने प्यार भरे अन्दाज़ में इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप की मग़िफ़रत फ़रमाए, मैं ने आप को नहीं बताया लेकिन दीगर लोगों ने आप को बता दिया, मैं जंग के इख़िताम का मुन्तज़िर था अगर दौराने जंग बताता तो शायद जंगी मुआ-मलात में ख़लल वाक़ेअ़ होता, इरादा येह ही था कि मुनासिब मौक़अ़ पर आप को बता दूंगा और वैसे भी मुझे गवर्नरी के ओहदे की कोई ख़्वाहिश नहीं और न ही मैं दुन्या के लिये कोई अमल करता हूं क्यूं कि मुझे मा'लूम है दुन्या एक न एक दिन ख़त्म हो जाएगी और हम तो आपस में इस्लामी भाई हैं, अल्लाह के हुक्म को काइम करने वाले हैं। ऐसे लोगों को इस बात से क्या ग़रज़ कि इन्हें किसी ने दुन्यवी या दीनी मुआ-मले में शरीक किया हो या नहीं ? लेकिन गवर्नर अम लोगों से ज़ियादा फ़ितने के क़रीब होता है और उस से ग़-लती के इम्कानात भी ज़ियादा होते हैं, ख़ता से तो वोह ही शख़्स बच सकता है जिसे अल्लाह बचाए। येह कहते हुए हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जर्हाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का मक्तूब हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को दे दिया।¹

इशाअते इल्म का अज़ीम जज़्बा

हज़रते सय्यिदुना इयाज़ बिन गुतैफ़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हम हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जर्हाह रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ कि

.....الرياض النضرة، ج ٢، ص ٣٥٣

इयादत के लिये हाज़िर हुए आप की जौजा पास ही बैठी हुई थीं और आप رضي الله تعالى عنه का चेहरा दीवार की तरफ़ था, हम ने आप की जौजा से पूछा : “इन की रात कैसी गुज़री है ?” उन्होंने ने कहा : “सहीह गुज़री ।” तो अचानक आप رضي الله تعالى عنه ने हमारी तरफ़ देखा और इर्शाद फ़रमाया : “मेरी रात ठीक नहीं गुज़री ।” और फ़रमाने लगे : “क्या तुम मुझ से कोई इल्मी बात नहीं पूछोगे ?” हमें बड़ा तअज्जुब हुवा (कि इतने शदीद मरज़ में भी इशाअते इल्म का कैसा अज़ीम ज़ब्बा रखते हैं) हम ने अर्ज़ की : “क्यूं नहीं ।” आप ने इर्शाद फ़रमाया : “मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम صلى الله تعالى عليه وآله وسلم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि जो अपने और अपने अहलो इयाल पर खर्च करे, मरीज़ की इयादत करे, रास्ते से कोई तक्लीफ़ देह चीज़ दूर करे तो उस के लिये दस गुना अज़्र है, रोज़ा एक ऐसी ढाल है जिसे कोई चीज़ चीर नहीं सकती और عز وجل जिसे किसी जिस्मानी बीमारी में मुब्तला फ़रमाए तो वोह बीमारी उस के लिये मग़िफ़रत का बाइस है ।”¹

रोज़ादार के लिये जन्नत की ज़मानत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه को इशाअते इल्म का येह ज़ब्बा बारगाहे न-बवी على صاحبها الصلوة والسلام से ही मिला था और आप رضي الله تعالى عنه सरकार صلى الله تعالى عليه وآله وسلم से मसाइल पूछा करते थे । चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इर्शाद फ़रमाया :

1..... تاريخ مدينه دمشق، ج ٤، ص ٢٦٠

“जो र-मज़ान का रोज़ा रखे और तीन चीज़ों से बचा रहे तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूँ।” हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन ज़र्राह رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह ! वोह तीन चीज़ें कौन सी हैं ?” इर्शाद फ़रमाया : “ज़बान, पेट और शर्मगाह।”¹

नसीहत आमोज़ वसिथ्यत

जब आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो इर्शाद फ़रमाया : “मैं ऐसी नसीहत करता हूँ अगर तुम उसे क़बूल कर लो तो हरगिज़ ख़ैर से महरूम नहीं रहोगे, नमाज़ काइम करो, र-मज़ान के रोज़े रखो, स-दक़ा करो, हज़ करो, उ़म्ह करो, एक दूसरे के साथ भलाई करो, अपने उ-मरा (हुक्मरानों) को नसीहत करो उन को धोके में न रखो, दुन्या तुम्हें हलाक न कर दे, बिला शुबा अगर कोई शख़्स हज़ार साल जी ले तो भी मौत उसे पछाड़ देगी, बेशक अल्लाह ने बनी आदम के मुक़द्दर में मौत लिख दी है इन की मौत यकीनी है, तुम में सब से बढ कर दाना शख़्स वोह है जो अपने रब का सब से ज़ियादा इताअत गुज़ार और आख़िरत से ज़ियादा ख़बरदार है, अल्लाह की तुम पर सलामती और रहमत हो। ऐ मुआज़ ! लोगों से सिलए रेहमी करते रहना।”²

विसाले ज़ाहिरी

जब शाम में तारुन की वबा फैली तो आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ लोगों को खुत्बा देने के लिये खड़े हुए और इर्शाद फ़रमाया : “ऐ लोगो !

[1].....تاريخ مدينة دمشق، ج ۵۲، ص ۱۶۶ مفهوماً

[2].....الرياض النضرة، عبيده بن جراح، ج ۲، ص ۳۵۸

येह मरज़ तो रब की रहमत, तुम्हारे नबी की दुआ और तुम से पहले गुज़रने वाले सालिहीन की मौत का सबब है।” फिर आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اَللّٰہ سے दुआ की, कि इस बीमारी से आप को भी हिस्सा मिले। आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ की दुआ क़बूल हुई और चन्द दिनों बा'द ताऊन की बीमारी में मुब्तला हो गए। आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ बैतुल मुक़द्दस में नमाज़ पढ़ने जा रहे थे कि रास्ते में ही इन्तिक़ाल हो गया और ताऊन के सबब शहादत का मर्तबा पाया।¹

आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ का विसाले ज़ाहिरी 18 सिने हिजरी में शाम के शहर उरदन में हुवा, उस वक़्त आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ की उम्र 58 साल थी और आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ के दोस्त हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई, हज़रते मुआज़, हज़रते अम्र बिन आस और हज़रते ज़ह्हाक बिन कैस رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ को क़ब्र में उतारा।²

मज़ारे पुर अन्वार

आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ का मज़ारे पुर अन्वार मुल्के शाम के शहर “गौर बैसान” में मरज़ए ख़लाइक़ है, शारेहे मुस्लिम हज़रते सय्यिदुना अल्लामा अबू ज़-करिय्या यहूया बिन शरफ़ न-ववी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) फ़रमाते हैं कि “हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन ज़रीह رضی اللہ تعالیٰ عنہ के मज़ारे पुर अन्वार पर एक अज़ीब क़िस्म की जलालत त़ारी है जो यकीनन उन के शायाने

[1].....تاريخ مدينة دمشق، ج: ٢٨، ص: ١٠٨

الاصابة في تمييز الصحابة، الرقم ٢٣١٨ عامر بن عبد الله، ج ٣، ص ٢٤٨

[2].....الاستيعاب في معرفة الاصحاب، كتاب الكنى، ابو عبيدة بن جراح، ج ٣، ص ٢٤٣

शान है और जब मैं ने आप رضي الله تعالى عنه के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत की तो वहां कई अज़ाइबात देखे ।”¹

एक ही दिन त़ाऊन का हम्ला हुवा

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन ग़नम رضي الله تعالى عنه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल, हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह, हज़रते सय्यिदुना शुरहूबील बिन ह-सना और हज़रते सय्यिदुना अबू मालिक رضي الله تعالى عنهم चारों बुजुर्गों पर एक ही दिन त़ाऊन का हम्ला हुवा । हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رضي الله تعالى عنه ने फ़रमाया : “येह तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की रहमत और तुम्हारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की दुआ है, नीज़ तुम से क़ब्ल नेक लोग इसी बीमारी के सबब फ़ौत हुए, ऐ **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ !** मुआज़ की औलाद को इस रहमत से वाफ़िर हिस्सा अता फ़रमा ।” चुनान्चे अभी शाम भी न हुई थी कि आप के बेटे हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान رضي الله تعالى عنه त़ाऊन के मरज़ में मुब्तला हो गए जिन के नाम से आप رضي الله تعالى عنه ने अपनी कुन्यत रखी ।²

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رضي الله تعالى عنه का अपनी औलाद के लिये त़ाऊन की दुआ करना दर हकीकत इन के लिये शहादत व रहमत की दुआ करना है क्यूं कि सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इसे शहादत फ़रमाया है । जैसा कि फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : “त़ाऊन हर मुसल्मान की शहादत है ।”³ एक और रिवायत का खुलासा है कि “**अल्लाह عَزَّوَجَلَّ**

[1].....تهذيب الاسماء، الجزء الثاني، الرقم ١٨٢٦ ابو عبيدة بن الجراح، ج ٢، ص ٥٣٤

[2].....مجمع الزوائد، كتاب الجنائز، باب في الطاعون - - الخ، الحديث: ٣٨٦٣، ج ٣، ص ٣٨

[3].....صحيح البخاري، كتاب الجهاد والسير، باب الشهادة سبع، الحديث: ٢٨٣٠، ج ٢، ص ٢٢٣

ने इसे मुसलमानों के लिये रहमत बनाया है।¹

सन्दूकी क़ब्र खोदा करते

हज़रते सय्यिदुना उर्वह बिन जुबैर رضي الله تعالى عنه फ़रमाते हैं कि क़ब्र खोदने वाले मदीने में दो शख्स थे एक बग़ली खोदता था जब कि दूसरा बग़ली खोदना नहीं जानता था (या'नी सन्दूकी खोदता था) सहाबा رضيهم الرضوان ने सरकार صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की क़ब्र खोदने के लिये उन दोनों को पैग़ाम भेजा और कहा कि उन में जो पहले आएगा वोह ही **रसूलुल्लाह** صلى الله تعالى عليه وآله وسلم के लिये क़ब्र बनाए। तो पहले वोही सहाबी तशरीफ़ लाए जो बग़ली क़ब्र खोदते थे लिहाज़ा सरकार صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की बग़ली क़ब्र खोदी गई।² बग़ली क़ब्र या'नी लहद वाली क़ब्र खोदने वाले सहाबी हज़रते सय्यिदुना अबू तल्हा जैद बिन सुहैल अन्सारी رضي الله تعالى عنه थे और सन्दूकी क़ब्र खोदने वाले हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه थे, मदीना में दो ही बुजुर्ग सहाबी थे जिन्हें क़ब्र खोदना आती थी, इन का पेशा गोर कनी न था। इस हदीसे पाक से मा'लूम हुवा कि सन्दूकी क़ब्र मन्अ नहीं वरना हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जराह رضي الله تعالى عنه जैसे सहाबी ऐसी क़ब्र न खोदा करते और सहाबए किबार इन दोनों को पैग़ाम न भेजते, ख़याल रहे कि अगर्चे तमाम सहाबा क़ब्र खोदना जानते थे मगर वोह दोनों हज़रात बहुत मशशाक़ थे उन्हों ने चाहा कि क़ब्रे अन्वर बहुत आ'ला द-रजे की तय्यार हो जो बहुत तजरिबा कार ही कर सकता है।²

[1].....کنز العمال، الحديث: ۲۸۳۳۰، الجزء العاشر، ج ۵، ص ۳۱ ملقطاً

[2].....میر آتول مناجیہ، ج. 2، س. 490. ب تسرّف

आप سے مرवी رضی اللہ تعالیٰ عنہ चन्द अहादीसे मुबा-रका

(1)..... दिलों की कैफ़ियत

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द कोई नबी दज्जाल से डराने के लिये नहीं आया, पस मैं तुम्हें उस से डराता हूँ ।” फिर सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस की निशानियां बयान फ़रमाईं और फ़रमाया : “शायद मुझे देखने वाले और मेरा कलाम सुनने वाले दज्जाल को पा लें ।” सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ! क्या हमारे दिलों की कैफ़ियत उस वक़्त वैसी ही होगी जैसी अब है ? फ़रमाया : “इस से बेहतर होगी ।”¹

(2)..... मज़बूत ढाल :

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “रोज़ा ऐसी ढाल है जिसे कोई नहीं फाड़ सकता ।”²

(3)..... बद तरीन लोग :

हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का आख़िरी कलाम येह था : “यहूद को हिजाज़ से और अहले नजरान को जज़ीरए अरब से निकाल दो और जान लो कि क़ब्रों को सज्दा गाह बनाने वाले बद तरीन लोग हैं ।”³

1.....مسند البزاري، مسند ابو عبیده بن الجراح، الحديث: ۲۸۰، ج ۲، ص ۱۰۷

2.....السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الصيام، باب الصائم ينزه صياحه عن الغلظة، الحديث: ۸۳۱۳، ج ۲، ص ۲۵۰

3.....المسند للإمام احمد بن حنبل، حديث ابي عبیده بن جراح، الحديث: ۱۶۹۱، ج ۱، ص ۱۳

(4)..... मोमिन का दिल :

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “मोमिन का दिल चिड़िया की
 तरह कभी इधर और कभी उधर होता रहता है ।”¹

(5)..... सब से अफ़ज़ल नमाज़ :

हुस्ने अख़लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “रोज़े जुमुआ सब से अफ़ज़ल
 नमाज़ सुब्ह की नमाज़ है, यकीनन जो इसे पा ले बरोज़े क़ियामत बख़्शा
 दिया जाएगा ।”²

(6)..... मुनाफ़िक़ की पहचान :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 ने इर्शाद फ़रमाया : “मुझे अपने बा’द न किसी मोमिन से ख़ौफ़ है न
 काफ़िर से क्यूं कि मोमिन को उस का ईमान बुराई से रोके रखेगा और
 काफ़िर को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के कुफ़्र के सबब ज़लील फ़रमाएगा ।
 अलबत्ता मुझे तुम पर मुनाफ़िक़ का डर है जो ज़बान का आलिम हो, दिल
 का जाहिल हो, ज़बान से वोह कहे जिसे तुम अच्छा समझते हो और काम
 वोह करे जिसे तुम बुरा समझते हो ।”³

(7)..... बाहमी महबूबत करने वाले :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने

1.....المصنف لابن ابى شيبة، كتاب الزهد، كلام ابى عبيدة بن الجراح، الحديث: ٥، ج ٨، ص ٤٣

2.....مسند البزار، مسند ابى عبيدة بن الجراح، الحديث: ١٢٩، ج ٢، ص ١٠٦

3.....مسند الربيع، الاخبار المقاطع عن جابر بن زيد، ج ١، ص ٢٢

इर्शाद फ़रमाया : “कल बरोज़े कियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आपस में महबूबत करने वाले दो बन्दों के लिये कुर्सियां रखी जाएंगी जिन पर उन को बिठाया जाएगा यहां तक कि (लोगों का) हिसाबो किताब मुकम्मल हो जाए।”¹

(8)..... दस गुना अज़्र :

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “जो किसी मरीज़ की इयादत करे अपने अहलो इयाल पर खर्च करे या रास्ते से कोई तक्लीफ़ देह चीज़ दूर करे तो उसे दस गुना अज़्र मिलेगा।”²

नेकी की दा'वत के म-दनी फूल

हज़रते सय्यिदुना निमरान बिन मिख़मर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ سے मरवी है कि एक बार हज़रते सय्यिदुना अबू उब्बैदा बिन जर्हाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ ने लश्कर के साथ चलते हुए नेकी की दा'वत के म-दनी फूल कुछ यूं अता फ़रमाए : “सुनो ! बहुत से सफ़ेद लिबास वाले दीन के ए'तिबार से मैले होते हैं और बहुत से अपने आप को मुर्करम समझने वाले हक़ीर होते हैं। ऐ लोगो ! नई नेकियां पुराने गुनाहों को मिटा देती हैं अगर तुम में से किसी की बुराइयां ज़मीनो आस्मान को भर दें, फिर वोह कोई नेकी करे तो हो सकता है कि वोह एक नेकी उन तमाम गुनाहों पर ग़ालिब आ जाए और उन को मिटा दे।”³

1.....الجامع الصغير، الحديث: 4828، ص 281

2.....المصنف لابن ابي شيبة، كتاب الادب، باب في تنحية الاذى عن الطريق، الحديث: 3، ج 6، ص 218

3.....المصنف لابن ابي شيبة، كتاب الزهد، كلام ابي عبيدة بن الجراح، الحديث: 3، ج 8، ص 143

..... ماخز و مراجم

1	القرآن الکریم: کلام باری تعالیٰ، مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
2	ترجمۃ قرآن کنز الایمان: اعلیٰ حضرت امام احمد رضا ۱۳۴۰ھ، مکتبۃ المدینہ
3	صحیح البخاری: امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری ۲۵۶ھ، دار الکتب العلمیۃ
4	صحیح مسلم: امام مسلم بن حجاج قشیری متوفی ۲۶۱ھ، دار ابن حزم، بیروت
5	سنن ابن ماجہ: امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ ۲۴۳ھ، دار المعرفۃ، بیروت
6	سنن الترمذی: امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی ۲۷۹ھ، دار الفکر بیروت
7	المعجم الکبیر: الحافظ سلیمان بن احمد الطبرانی ۳۶۰ھ، دار احیاء التراث العربی
8	کتاب الزهد: امام احمد بن محمد بن حنبل متوفی ۲۴۱ھ، دار الغد الجدید
9	المستدرک: امام ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری ۴۰۵ھ، دار المعرفۃ، بیروت
10	مسند الربیع: الربیع بن حبیب بن عمر الازدی البصری، دار الحکمۃ، مکتبۃ الاستقامۃ
11	مسند البزار: امام احمد بن عمرو بن عبد الخالق بزار ۲۹۲ھ، جامع العلوم والحکم
12	مجمع الزوائد: حافظ نور الدین علی بن ابی بکر ہیتمی متوفی ۸۰۷ھ، دار الفکر، بیروت
13	المصنف: حافظ عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبۃ ۲۳۵ھ، دار الفکر بیروت
14	کنز العمال: علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی برهان پوری، متوفی ۹۷۵ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت
15	شعب الایمان: امام احمد بن حسین بن علی بیہقی متوفی ۴۵۸ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت
16	السنن الکبریٰ: امام احمد بن حسین بن علی بیہقی متوفی ۴۵۸ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت
17	الجامع الصغیر: امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت

18	البدور السافرة فى امور الازفة: امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ، مؤسسة الکتب الثقافیة
19	معرفة الصحابة: امام ابونعمیم احمد بن عبدالله ۵۳۰ھ، دارالکتب العلمیة
20	الاستیعاب فى معرفة الاصحاب، امام ابو عمرو یوسف بن عبدالله ۴۲۳ھ، دارالکتب العلمیة
21	اسد الغابة: ابوالحسن علی بن محمد بن الاثیر الجزری متوفی ۶۲۰ھ، داراحیاء التراث العربی، بیروت
22	الاصابة فى تمييز الصحابة: الحافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی ۸۵۲ھ، دارالکتب العلمیة
23	الریاض النضرة: امام احمد بن عبدالله المحب الطبری ۶۹۴ھ، دارالکتب العلمیة
24	تاریخ مدینه دمشق: الحافظ ابوالقاسم علی بن حسن الشافعی، المعروف بابن عساکر ۵۷۱ھ، دارالفکر
25	تاریخ الاسلام: امام محمد بن احمد بن عثمان الذهبی ۷۴۸ھ، دارالکتب العربی
26	فتوح الشام: ابی عبدالله محمد بن عمر الواقدی ۷۲۰ھ، دارالکتب العلمیة بیروت
27	تهذیب التهذیب: احمد بن ابن حجر عسقلانی شافعی ۸۵۲ھ، دارالفکر بیروت
28	تهذیب الاسماء: امام ابو زکریا محیی الدین بن شرف النووی ۶۷۶ھ، دار الفکر بیروت
29	مرقاة المفاتیح: علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۳ھ، دارالفکر، بیروت
30	مرآة المناجیح: حکیم الامت مفتی احمد یارخان نعمی، متوفی ۱۳۹۱ھ، ضیاء القرآن پبلیکیشنز



फ़ेहरिस्त

मौजूअ	सफ़्हा	मौजूअ	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	का मक़ाम	12
किरदार के गाज़ी	1	आप के नज़्दीक सिद्दीके अक्बर	
नाम व नसब	4	का मक़ाम	13
हुल्यए मुबा-रका	5	मरातिबे आशिक़ाने मुस्तफ़ा ब	
क़बूले इस्लाम	5	ज़बाने मुस्तफ़ा	13
अज़्वाज व औलाद	6	सय्यिदुना उमर फ़ारूक़	
जुल हिज़्रतैन	6	<small>رضی اللہ تعالیٰ عنہ</small> की ख़्वाहिश	14
तमाम ग़ज़वात में शिर्कत	7	फ़िरासते फ़ारूके	
रिज़ाए इलाही का मुज़्दा	7	आ'ज़म <small>رضی اللہ تعالیٰ عنہ</small>	15
अमीनुल उम्मत	8	मन्सबे ख़िलाफ़त सोंपने की आरजू	15
अमीन शख़्स का मुता-लबा	8	ख़लीफ़ा के लिये इन्तिखाब	16
महबूबे हबीबे खुदा	9	आप की शराफ़त	17
आप की ज़ात में कोई कलाम नहीं	9	जन्मती होने की सनद	18
रोशन और प्यारा चेहरा	10	कजाबे की चटाई और पालान का	
इश्के रसूल का अ-मली मुज़ा-हरा	10	तक्या	19
काफ़िर बाप का सर क़लम कर		घर का कुल सामान सिर्फ़ तीन	
दिया	10	चीज़ें	19
आप के हक़ में नाज़िल होने वाली		हज़रते उमर की आप को नसीहत	20
आयत	12	अमीनुल उम्मत का ज़ब्बए ईसार	21
सिद्दीके अक्बर के नज़्दीक आप		दुन्या अपने जाल में न फंसा सकी	23

मौजूअ	सफ़्हा	मौजूअ	सफ़्हा
काश ! मैं कोई मेंढा होता	23	रोज़ादार के लिये जन्नत की	
मैं खाल का कोई हिस्सा होता !	24	ज़मानत	43
क़ब्रों हशर की होल नाकियां	24	नसीहत आमोज़ वसियत	44
अच्छा मश्वरा क़बूल कर लिया	26	विसाले ज़ाहिरी	44
अमीरुल मुअमिनीन की खिदमत		मज़ारे पुर अन्वार	45
में मक्तूब	28	एक ही दिन ताऊन का हम्ला	
ओहदा लिये जाने पर हम्दे इलाही	31	हुवा	46
अमीनुल उम्मत और सैफुल्लाह		सन्दूकी क़ब्र खोदा करते	47
का म-दनी मुका-लमा	32	आप <small>رضي الله تعالى عنه</small> से मरवी चन्द	
ओहदा ले कर आज्माइश	33	अहादीसे मुबा-रका	48
आप की करामत, बे मिसाल		(1)..... दिलों की कैफ़ियत	48
मछली	34	(2)..... मज़बूत ढाल	48
एक करामत के ज़िम्न में कई		(3)..... बद तरीन लोग	48
करामतें	35	(4)..... मोमिन का दिल	49
अपने मा तहूतों से दिली महब्वत	36	(5)..... सब से अफ़ज़ल नमाज़	49
एहसासे ज़िम्मेदारी के क्या कहने !	38	(6)..... मुनाफ़िक़ की पहचान	49
मुम्किन नहीं कि ख़ैरे बशर को		(7)..... बाहमी महब्वत करने	
ख़बर न हो	38	वाले	49
ख़ल्वत में फ़िक्रे मदीना	40	(8)..... दस गुना अज़्र	50
आप <small>رضي الله تعالى عنه</small> की हिक्मते		नेकी की दा'वत के म-दनी फूल	50
अ-मली	41	मआख़िज़ो मराजेअ	51
इशाअते इल्म का अज़ीम जज़्बा	42		



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सुन्नत की बहारें

तब्लीगी कुरआनो सुन्नत की अ़ालमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा 'वते इस्लामी के महेके महेके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी नियतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इत्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक़्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ, इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और इम़ान की हिफ़ाज़त के लिये कुदने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आमात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफिस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
 देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
 नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
 अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
 हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
 हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्प्लेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना[®]

दा'वते इस्लामी



फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
 Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net